आम आदमी के लिए आयकर एक समस्या व उसका निराकरण

डॉ0 कृष्णा शुक्ला

Assistant Professor,
PGDAV College (Eve.), University of Delhi, Delhi

1 प्रस्तावनाः

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में आज की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा अशिक्षित हैं या केवल साक्षर हैं। कृषि उनका प्रमुख व्यवसाय है जिससे उनकी आय अनियमित व अनिश्चित होती है। ऐसे में कृषि से प्राप्त आय कर मुक्त होती है किंतु गैर कृषि आय के सन्दर्भ में आयकर शब्द आम आदमी को बड़ी भयानक समस्या प्रतीत होता है। आयकर का शब्द सुनते ही मस्तिष्क में एक प्रश्न उठता है कि व्यक्तिगत आय जो कि कोई व्यक्ति अपने स्वयं के प्रयासों से अर्जित करता हैं उस पर आयकर का क्या औचित्य हैं? साथ ही जिन्हें वाणिज्य का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है वे लोग तो इससे सर्वथा विरोधी स्वर बोलते नजर आते हैं। अतः आम आदमी को इस विषय से अवगत कराना अत्यंत आवश्यक है कि आयकर क्यों जरूरी है? आय का देश व सरकार के लिए क्या महत्त्व है? आयकर की गणना कैसे की जाती है? इसका लाभ किन लोगों को मिलता है?

2 महत्त्वः आम आदमी के आयकर से प्राप्त राजस्व को सरकार कहाँ खर्च करती है?

आयकर से प्राप्त राजस्व का उपयोग देश की मूलभूत सुविधाओं के विकास, औद्योगिक विकास, आर्थिक विषमता उन्मूलन, मुफ्त चिकित्सा व्यवस्था, शिक्षा, समाज कल्याणकारी कार्य, देश की आंतरिक व बाह्य सुरक्षा, देश के विकास के लिए आधारभूत ढाँचा तैयार करने, पिछड़े व गरीब वर्ग के उत्थान, आवास, महिला सशक्तिकरण व अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर खर्च किया जाता है। अगर देश में मजबूत व सरलीकृत आयकर प्रणाली नहीं होगी तो ये सब कार्य करना कैसे संभव होंगे क्योंकि सरकार की स्वयं की कोई आय नहीं होती है। प्रतिवर्ष वित्तमंत्री देश का वित्तीय बजट संसद में पेश करते हैं। जिसमें प्रतिवर्ष के आयकर की दरों व नियमों का प्रावधान होता है। एक निश्चित सीमा तक की आय आयकर से मुक्त होती है। उससे ज्यादा आय पर बढ़ती हुई कर की दरें लागू होती हैं। साथ ही किसी भी व्यक्ति के गतवर्ष में भारत में

निवास के आधार पर उसका निवास का स्तर तय किया जाता है। सरकार का प्रयास यह होता है कि देश में प्रचलित जीवन यापन सूचकांक को देखते हुए एक निश्चित सीमा तक की आय को कर मुक्त घोषित किया जाता है। जिससे आर्थिक विषमता भी दूर की जा सके।

3 शोध विधि :

समाज के विभिन्न वर्गो, बुद्धिजीवी व उच्च शिक्षित वर्ग के लोगों से भी चर्चा करने पर यह तथ्य उभर कर सामने आया कि अधिकांश लोग आयकर की समझ से अनभिज्ञ हैं साथ ही उदासीन भी क्योंकि यह एक बहुत पेचीदा विषय समझा जाता है। आम व्यक्ति यही समझते हैं कि नियोक्ता ने जो कर काटा है वह सही है। जो लोग थोड़ा आयकर ज्ञान रखते हैं वे ही यह जानने का प्रयास करते है कि उनका जो कर काटा गया है वो सही है या नहीं तथा प्रयास करते हैं कि कर बचाने के लिए क्या करना चाहिये?

कॉमर्स के छात्रों से भी चर्चा करने पर यह तथ्य उभर कर सामने आया कि वे भी व्यवहारिक जीवन में इसे उपयोग करने में कठिनाई महसूस करते हैं। वे कहते हैं कि इतने सारे प्रावधान कैसे याद किये जायें यह बड़ा कठिन काम है। इसे तो एक चार्टर्ड एकाउन्टेंट ही कर सकता है। आमतौर पर लोगों को केवल इतना ज्ञान होता है कि कितनी आय कर मुक्त होती है?

4 सुझाव :

- मोटे तौर पर हर व्यक्ति अपने कर का आँकलन कर सकेगा तो आयकर से जुड़ी भ्रांतियाँ दूर होगी। लोगों की यह धारणा है कि आय छुपानी चाहिए नही तो पता नहीं क्या मुसीबत हो जायेगी? कितना सारा आयकर जमा करना पड़ेगा। यह मनोवैज्ञानिक भय दूर करने की जरुरत है।
- लोगों को उनकी नैतिक जिम्मेदारी समझाने की जरुरत है कि जो आय वे अर्जित करते हैं उसमें देश व समाज का भी योगदान होता है। अतः यह उनका नैतिक दायित्व है कि वे देश व समाज के हित के लिए ईमानदारी से कर चुकायें।
- आम लोगों को यह जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए कि उनके द्वारा चुकाये गये कर का व्यय किन कार्यों पर किया गया है तथा उसका लाभ किस वर्ग को मिला है। इससे लोगों का सरकार के प्रति विश्वास बढेगा तथा वे ये समझ पायेंगे कि हमारी मेहनत की आमदनी से चुकाये गये आयकर के प्रति सरकार जवाब देह है।
- भ्रष्टाचार के कारण लोगों के मन में यह दुविधा रहती है कि हम हमारी आय से वंचित हो जायेंगे तथा इस धन को भी भ्रष्टाचार का दानव निगल लेगा। इसके लिए सरकार को पारदर्शिता रखनी चाहिए।

- देशवासियों के मन में अपने देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने की भावना जागृत करने की आवश्यकता है। यह समझाने व अहसास कराने की जरूरत है कि उनका एक–एक रुपया देश के लिए कितना महत्वपूर्ण है उसका सदुपयोग करके देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया जा सकता है।
- लोगों को यह समझाने की जरूरत है कि धर्म, जाति संप्रदाय या सामाजिक कुरीतियों पर अनापशनाप धन बर्बाद करने के बजाय जो लोग स्वेच्छा से आयकर के दायरे में न आते हो तो भी देश के लिए आयकर का भुगतान करें। इससे देश का बहुत बड़ा हित होगा ।
- जब सभी नागरिक शिक्षित, संस्कारवान व ईमानदार होंगे तो देश से कुपोषण, बेराजगारी, आर्थिक पिछड़ापन, अंधविश्वास, गंदगी का उन्मूलन होगा। देश मजबूत बनेगा।
- लोगों में कर अदायगी की होड़ लगेगी तो भ्रष्टाचार स्वतः समाप्त होगा। लोग स्वेच्छा से कर अदायगी में भागीदारी करेंगे।

5 निष्कर्ष :

आम आदमी अपना कर का मोटा–मोटा आकलन करना जान जायेगा तो वह इसके अज्ञान से उपजी भ्रांतियों से मुक्ति पायेगा। इसके फायदों से अवगत होगा तो निष्पक्षता व ईमानदारी से खुशी–खुशी देश के लिए स्वेच्छा से कर चुकायेगा। समय–समय पर बुद्धिजीवी वर्ग, समाजसुधारक, विचारक व सरकार विभिन्न किस्म के प्रचार व प्रसार से जनमानस में कर अदायगी को लोकप्रिय बना सकते हैं।